VSJ

मेघ आए

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

की एक अनुपम रचना का विश्लेषण

notesjobs.in

कवि परिचय: सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

जिनकी कलम में गाँव की आत्मा बसती थी

- **जन्म:** 1927, बस्ती (उत्तर प्रदेश)
- **प्रमुख कृतियाँ:** 'काठ की घंटियाँ', 'बाँस का पुल', 'खूँटियों पर टँगे लोग'
- **सम्मान:** साहित्य अकादेमी पुरस्कार
- **काव्य शैली:**
  - ग्रामीण संवेदना के साथ शहरी मध्यवर्गीय जीवनबोध का अनूठा संगम।
  - भाषा अत्यंत सहज एवं लोक की महक लिए हुए।

notesjobs.in

कविता का केंद्रीय भाव

जब बादल गाँव के मेहमान बन गए

इस कविता में कवि ने मेघों के आने की तुलना सज-धजकर आए एक प्रवासी अतिथि (दामाद) से की है।

ग्रामीण संस्कृति में दामाद के आगमन पर जो उल्लास का वातावरण बनता है, कवि ने मेघों के आने का सजीव वर्णन करते हुए उसी उल्लास को प्रकृति के माध्यम से दिखाया है। यह कविता प्रकृति और मानवीय भावनाओं का एक अद्भुत संगम है।

notesjobs.in

पद १ और २: अतिथि का भव्य आगमन

गाँव में हलचल और उत्सुकता का दृश्य

मेघ आए **बड़े बन-ठन के सँवर के।**
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।

notesjobs.in

पद ३ और ४: स्वागत, उलाहना और मिलन

परंपरा, प्रेम और प्रतीक्षा का अंत

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'– बोली अकुलाई
लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।

VSJ

क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।

notesjobs.in

मुख्य रूपक: मेघ = पाहुन (अतिथि)

कविता के हर तत्व में छिपा है यह गहरा संबंध

प्रकृति (मेघ का आगमन)	मानवीय संबंध (दामाद का आगमन)
मेघ (बन-ठन कर आए)	**पाहुन/दामाद** (शहर से सज-धज कर)
बयार (नाचती-गाती हवा)	**गाँव** के **बच्चे/सालियाँ** (संदेशवाहक)
पेड़ (गर्दन उचकाकर झाँकना)	उत्सुक ग्रामवासी (मेहमान को देखते हुए)
नदी (ठिठकना, घूँघट सरकाना)	गाँव की महिलाएँ (लज्जा और उत्सुकता से)
लता (व्याकुल होकर उलाहना देना)	विरह में व्याकुल पत्नी
वर्षा (झर-झर पानी बरसना)	मिलन के खुशी के आँसू

notesjobs.in

मानवीकरण: जब प्रकृति में भावनाएँ जागीं

कविता का सबसे शक्तिशाली अलंकार

कवि ने प्रकृति के निर्जीव उपादानों को मानवीय क्रियाएँ और भावनाएँ करते हुए दिखाकर कविता को जीवंत

पेड़: उत्सुक गाँव वालों की तरह गरदन उचकाकर झाँकते हैं।

VS

धूल: गाँव की अल्हड़ युवती की तरह अपना 'घाघरा' उठाकर भागती है।

नदी: नई नवेली दुल्हन की तरह ठिठकती है और घूँघट सरका कर देखती है।

लता: व्याकुल पत्नी की तरह किवाड़ की ओट से प्रियतम को देखती और उलाहना देती है।

notesjobs.in

परंपरा का सजीव चित्रण
कविता में भारतीय ग्रामीण रीति-रिवाजों की झलक

1.

****अतिथियों का स्वागत:*** मेहमान के आने पर पूरा गाँव उत्सुक हो जाता है।

2.

****बुजुर्गों का सम्मान:** घर के बड़े-बुजुर्ग (बूढ़े पीपल) आगे बढ़कर मेहमान का आदर-सत्कार (जुहार) करते हैं।

3.

****पैर धोना:** तालाब का प्रसन्न होकर परात में पानी लाना, मेहमान के पैर धोने की प्राचीन परंपरा का प्रतीक है।

4.

**** प्रेम-भरा उलाहना:** 'बरस बाद सुधि लीन्हीं' पंक्ति में पत्नी का अपने पति के लिए प्रेम और शिकायत का भाव मार्मिक रूप से व्यक्त हुआ है।

notesjobs.in

कविता का शिल्प सौंदर्य

भाषा, लय और अलंकार का अद्भुत संतुलन

भाषा

* **भाषा:** सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा।
* 'पाहुन', 'जुहार', 'किंवार', 'अटारी' जैसे आंचलिक शब्दों का प्रयोग कविता को प्रामाणिकता देता है।

अलंकार

* **अलंकार:**
* **मानवीकरण:** पूरी कविता इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।
* **उत्प्रेक्षा:** "पाहुन **ज्यों** आए हों गाँव में शहर के।"
* **रूपक:** 'क्षितिज-अटारी' (क्षितिज रूपी अटारी)।

शैली

* **शैली:**
* चित्रात्मक शैली, जिससे हर दृश्य आँखों के सामने साकार हो उठता है।
* प्रकृति और मानवीय संबंधों का सुंदर समन्वय।

notesjobs.in

विचार मंथन

अभ्यास के लिए प्रमुख प्रश्न

VSJ
(15%)

1. लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?
(संकेत: व्याकुलता, प्रतीक्षा और प्रेम-भरे उलाहने के भाव से)

2. 'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की' - इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
(संकेत: बादल नहीं आएँगे, यह भ्रम टूट गया और अब वर्षा होगी)

3. कविता में जिन रीति-रिवाजों का चित्रण हुआ है, उनका वर्णन कीजिए।
(संकेत: मेहमान का स्वागत, बड़ों द्वारा आदर, पैर धोना)

notesjobs.in

धन्यवाद

Vinayak Study Junction
BEAWAR

Dadhich Colony Masuda Road, Beawar
Mo. 9252637138

notesjobs.in